

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलॉजी, सत्र 12, यीशु के कार्य के चित्र

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और जोहानिन धर्मशास्त्र पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 12 है, यीशु के कार्य के चित्र।

हम यीशु के व्यक्तित्व और उस व्यक्ति को चित्रित करने वाले चित्रों के जोहानिन धर्मशास्त्र के अध्ययन से आगे बढ़कर यीशु के उद्धारक कार्य के बारे में जॉन की प्रस्तुति की ओर बढ़ते हैं और, जैसा कि बाइबिल धर्मशास्त्र के साथ प्रथा है, मसीह के कार्य को प्रस्तुत करने वाले चित्रों, रूपकों और छवियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

अवलोकन। मनुष्य का पुत्र ऊपर उठाया गया - अच्छा चरवाहा।

परमेश्वर का मेमना। पुरोहित बलिदान। 1719, अक्सर उपेक्षित।

विक्टर, क्राइस्टस विक्टर, क्राइस्ट द चैंपियन, एक महत्वपूर्ण विषय। एक अंश में, यीशु वह है जो राष्ट्र के लिए मरेगा - अध्याय 11।

कैफा के मुख से एक भविष्यवाणी। वह गेहूं का वह दाना है जो मर रहा है और बहुत फल लाता है -- अध्याय 12:20 से 25 तक।

मनुष्य का पुत्र। अब, इस उपाधि पर जोर दिया गया है, लेकिन विशेष रूप से मनुष्य के पुत्र पर जिसे ऊपर उठाया गया है। हमने इसे 3:11 से 15 में देखा है।

मैं इसे फिर से पढ़ूंगा। सच-सच, नीकुदेमुस, मैं तुझ से कहता हूँ, हम जो जानते हैं, वही कहते हैं और जो हमने देखा है, उसकी गवाही देते हैं, लेकिन तू हमारी गवाही स्वीकार नहीं करता। अगर मैंने तुम्हें सांसारिक बातें बताई और तुम विश्वास नहीं करते, तो अगर मैं तुम्हें स्वर्गीय बातें बताऊँ तो तुम कैसे विश्वास कर सकते हो? कोई भी स्वर्ग में नहीं चढ़ा, सिवाय उसके, जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र।

और जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया था, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए। ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, उसे अनंत जीवन मिले। जैसा कि हमने अभी कहा, मनुष्य के पुत्र, यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाना मूसा द्वारा जंगल में पीतल के साँप को ऊपर उठाने के प्रकार का प्रतिरूप है।

गिनती 21. इसे पढ़ना अच्छा रहेगा। होर पर्वत से, गिनती 21, 4, वे एदोम देश के चारों ओर जाने के लिए लाल सागर के रास्ते से निकले।

और लोग रास्ते में अधीर हो गए। और लोगों ने परमेश्वर के खिलाफ़ बात की, यह एक बुरा विचार था, और मूसा के खिलाफ़, यह उतना बुरा नहीं था, लेकिन फिर भी एक बुरा विचार था। तुम हमें मिस्र से बाहर, मिस्र से बाहर, जंगल में मरने के लिए क्यों लाए हो? क्योंकि वहाँ न तो भोजन है और न ही पानी, और हम इस बेकार भोजन से घृणा करते हैं।

और यहोवा ने लोगों के बीच में तेज विष वाले साँप भेजे, और उन्होंने लोगों को डस लिया, और बहुत से इस्राएली मर गए। और लोग मूसा के पास आए और कहने लगे, हमने पाप किया है, क्योंकि हमने यहोवा और तेरे विरुद्ध बातें की हैं। यहोवा से प्रार्थना करो कि वह साँपों को हम से दूर कर दे।

इसलिए, मूसा ने लोगों के लिए प्रार्थना की, और प्रभु ने मूसा से कहा, "एक ज्वलंत साँप बनाओ और उसे एक खंभे पर लटका दो, और जो कोई भी इसे काटेगा, वह इसे देखेगा तो जीवित रहेगा।" अहा, जब काटा जाता है, तो यह मारक है, ऐसा कहा जाता है। इसलिए, मूसा ने एक पीतल का साँप बनाया और उसे एक खंभे पर लटका दिया, और अगर कोई साँप किसी को काटता, तो वह पीतल के साँप को देखता और जीवित रहता।

जैसे मूसा ने, यूहन्ना 3:14 में, जंगल में साँप को ऊपर उठाया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए, ताकि जो कोई उसकी ओर देखे, उस पर विश्वास करे, उसे अनन्त जीवन मिले। मसीह के व्यक्तित्व के उपचार के अंतर्गत मैंने जो सुझाव दिया है, उसका प्रकार उससे कहीं अधिक विस्तृत है। वहाँ न्याय है।

यूहन्ना के शब्दों में कहें तो, विद्रोह करने वालों को पहले ही दोषी ठहराया जा चुका था क्योंकि आग के साँप लोगों को डस रहे थे और पहले ही बहुत से लोग मर चुके थे। खंभे पर लटका हुआ साँप, क्रूस पर चढ़ाए गए मनुष्य के पुत्र से मेल खाता है। खंभे पर लटके साँप को देखने में विश्वास शामिल है।

इसी प्रकार, यीशु पर विश्वास करना भी इसका प्रतिरूप है। और जिन्होंने देखा, भले ही उन्हें काटा गया था, वे दंड, सज़ा से बच गए। इसी तरह, हालाँकि वे आध्यात्मिक रूप से पाप में मरे हुए पैदा हुए हैं और पहले से ही दोषी हैं, जो लोग क्रूस पर चढ़ाए गए मनुष्य के पुत्र, यीशु पर विश्वास करते हैं, उन्हें परमेश्वर के न्याय से क्षमा किया जाता है, बचाया जाता है, और उन्हें, यूहन्ना 3:15, अनन्त जीवन मिलता है।

यूहन्ना 12 एक दिलचस्प अध्ययन है। हमने पहले भी इसका कुछ भाग पढ़ा है। संदर्भ समझने के लिए हमें श्लोक 27 पर जाना होगा।

अब मेरा मन व्याकुल है। मैं क्या कहूँ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा, परन्तु इसी उद्देश्य से मैं इस घड़ी तक पहुँचा हूँ। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।

तभी स्वर्ग से एक आवाज़ आई। यह यूहन्ना की भाषा में गेथसेमेन जैसा लगता है। मैंने इसे महिमा दी है, और मैं इसे फिर से महिमा दूँगा।

भीड़ ने गलतफ़हमी जताई। वे समझ ही नहीं पाए। वे आध्यात्मिक रूप से इतने मूर्ख हैं।

अगर भगवान स्वर्ग से बोलते हैं, तो वे समझ नहीं पाते। उन्हें लगता है कि कोई स्वर्गदूत बोल रहा है या फिर उन पर गरज के साथ हमला हुआ है। यीशु कहते हैं, अब इस दुनिया का न्याय होने वाला है।

अब, क्या इस दुनिया के शासक को बाहर निकाल दिया जाएगा और बाहर निकाल दिया जाएगा? जब मैं धरती से ऊपर उठा लिया जाऊंगा, तो मैं सभी लोगों को अपनी ओर खींच लूंगा। हम उस खींचे जाने से निपटने जा रहे हैं। मैं आपको यहाँ बताता हूँ कि मैं क्या सोचता हूँ।

जब हम मोक्ष बृहदांश रेखाचित्र पर पहुंचेंगे तो हम इस पर अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। यह दिखाने के लिए था कि वह किस तरह की मृत्यु मरने वाला था। यहाँ हमारा मुख्य मुद्दा यह है।

यीशु को ऊपर उठाए जाने से उसकी मृत्यु होगी। जब मैं पृथ्वी से ऊपर उठाया जाऊंगा, तो मैं सभी लोगों को अपनी ओर खींचूंगा। मुझे यह कहना चाहिए था कि न केवल मनुष्य के पुत्र के ऊपर उठाए जाने की पृष्ठभूमि नौ है, बल्कि फिर से, इस बात पर आम सहमति है कि यह सच है।

यूहन्ना ने यह कहा है, लेकिन समग्र चित्र यशायाह 53 से पहचाना जाता है, जहाँ सेवक की भयानक पीड़ा से पहले, यहाँ तक कि आश्चर्यजनक रूप से, हमारे द्वारा देखे गए रक्तपात से पहले, देखो, मेरे सेवक, यह 22, 13 है। यशायाह 53 वास्तव में यशायाह 52:13 में शुरू होता है। देखो, मेरा सेवक बुद्धिमानी से काम करेगा।

वह ऊंचा और ऊपर उठाया जाएगा और ऊंचा किया जाएगा। ऊंचा, ऊपर उठाया जाएगा, तीन बार ऊंचा किया जाएगा। इसमें विजय का भाव है और यह एक समावेश है।

यशायाह 53 लूट, विजय, इत्यादि के साथ समाप्त होता है। और प्रभु का सेवक सभी कष्टों से पहले उसमें भाग लेता है, जो भयानक है। हमारे पास यह तीन गुना उत्थान है।

और इसे कहने के तीन तरीकों में से एक यह है कि उसे ऊपर उठाया जाएगा। हमें लगता है कि चौथे सुसमाचार में भी ऊपर उठाए जाने की भाषा के पीछे यही बात है। निश्चित रूप से, मूसा द्वारा साँप को ऊपर उठाना भी एक भूमिका निभाता है।

12:32, 33, जब मैं ऊपर उठाया जाऊँगा, तो मैं सभी लोगों को अपने पास खींच लूँगा। क्या इसका मतलब यह है कि हर कोई बच जाएगा? यह एक संभावित समझ है, लेकिन यह एक गलतफ़हमी है क्योंकि ऐसा नहीं होता है। यूहन्ना 5:28, 29, मनुष्य के पुत्र की आवाज़ पर, लोग अपनी कब्रों से बाहर आएँगे, कुछ जीवन के पुनरुत्थान के लिए, कुछ न्याय, निंदा के पुनरुत्थान के लिए।

यहाँ यह पद 20 की तरह दिखता है, अब जो लोग पर्व पर आराधना करने गए थे उनमें कुछ यूनानी भी थे, और उन्होंने यीशु से मुलाक़ात करने के लिए कहा। उन्हें तुरन्त उस मुलाक़ात से वंचित कर दिया गया। और टिप्पणीकार जो कहते हैं, और मैं सहमत हूँ, वह यह है कि यीशु के

पास अपने आने वाले समय के बारे में तुरन्त कहने के लिए अन्य बातें थीं जो उस पर दबाव डाल रही थीं।

उसे समय के साथ काम करना था, लेकिन उसके हिस्से के रूप में, वह पीछे नहीं हटेगा, पिता ने उसके लिए जो आदेश दिया है, उससे पीछे नहीं हटेगा। वह कहता है, अपने नाम की महिमा करो। पिता कहते हैं, स्वर्ग से आमीन।

फिर यीशु कहते हैं, शैतान पराजित हो चुका है, मृत्यु और पुनरुत्थान की आशा कर रहा है, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान। और फिर वह कहते हैं, जब मैं पृथ्वी से ऊपर उठा लिया जाऊंगा, तो मैं सभी लोगों को अपने पास खींच लूंगा। अब वह यूनानियों को भी शामिल करता है।

अब, इसमें वे सभी शामिल हैं जो विश्वास करेंगे। विशेष रूप से, 10:33 कहता है कि यह दिखाने के लिए है कि वह किस तरह की मृत्यु मरने जा रहा था। पिछली आयत में मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाने का संकेत उसके क्रूस पर चढ़ने की ओर इशारा करता है, जिसके बारे में मैंने पहले ही सुझाव दिया है कि यह दोहरा अर्थ है।

यह भयानक निष्पादन और दर्द की बात करता है, लेकिन यह परमेश्वर के द्वारा मनुष्यों के क्रोध का उपयोग उसकी स्तुति करने के लिए करने के कारण होने वाले उल्लास की भी बात करता है, क्योंकि यूहन्ना 18 में परमेश्वर बुराई का उपयोग परम भलाई के लिए करता है। हाँ, हमारे पास 3132 है। पुनः, यह किसी विशेष शीर्षक का उपयोग नहीं कर रहा है, लेकिन यह यीशु की मृत्यु के तरीके के बारे में बोल रहा है।

यह बहुत ही खराब है। यीशु को सुबह-सुबह कैफा के घर से गवर्नर के मुख्यालय में ले जाया गया। यहूदी गवर्नर के मुख्यालय में इसलिए नहीं गए ताकि वे अपवित्र न हो जाएँ बल्कि फसह का भोजन कर सकें।

यह धिनौना है। वे औपचारिक रूप से अपवित्र नहीं होना चाहते, लेकिन वे अपने मसीहा को सूली पर चढ़ाने के लिए नेताओं के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। आह, वे पहले से ही एक तरफ से अपवित्र हैं और दूसरी तरफ से नीचे।

पिलातुस ने बाहर आकर उनके पास कहा, “तुम इस मनुष्य पर क्या अभियोग लगाते हो?” उन्होंने कहा, “यदि यह मनुष्य बुरा न करता, तो हम उसे तुम्हारे हाथ न सौंपते।” उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। पिलातुस ने कहा, “तुम ही उसे ले जाओ और अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो।”

यहूदियों ने कहा कि हमारे लिए किसी को मौत की सज़ा देना वैध नहीं है। वे मृत्युदंड चाहते हैं। वास्तव में, कभी-कभी महासभा मृत्युदंड दे सकती थी, लेकिन एक सामान्य नियम के रूप में, यह बिल्कुल सही है।

और वे अपवादों के लिए नहीं जाना चाहते। वे, ठीक है, गले तक जाना चाहते हैं, और वे रोमनों के माध्यम से ऐसा करना चाहते हैं। हमारे लिए किसी को भी मौत की सज़ा देना, कम से कम सूली पर चढ़ाकर, वैध नहीं है।

कभी-कभी, वे लोगों को पत्थर मारकर मार डालते थे। स्टीफन प्रेरितों के काम 7 के बारे में सोचें। यह उस वचन को पूरा करने के लिए था जो यीशु ने यह दिखाने के लिए कहा था कि वह किस तरह की मौत मरने जा रहा था। मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाया जाना इसका मतलब है कि मनुष्य के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाया गया।

यीशु अच्छा चरवाहा है - अध्याय 10. हम यह पहले भी कर चुके हैं, इसलिए मैं जल्दी से जा सकता हूँ।

10:11. मैं अच्छा चरवाहा हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों की परवाह करता है, उनसे प्यार करता है, उनकी देखभाल करता है, अपनी भेड़ों को जानता है।

यहाँ उसकी चिंता की सीमा है। भेड़ों के लिए अपनी जान दे देता है। चरवाहे के काम के शाब्दिक अर्थ में चरवाहे के काम के मूल नियम के अनुसार, चरवाहे भेड़ों के लिए अपनी जान नहीं देते क्योंकि फिर भेड़ों की देखभाल करने के लिए कोई चरवाहा नहीं होगा।

लेकिन यीशु कोई सामान्य चरवाहा नहीं है। वह अच्छा चरवाहा है, और वह भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। वह मज़दूर से अलग है।

मैं अच्छा चरवाहा हूँ, श्लोक 14. मैं अपने लोगों को जानता हूँ, मेरे अपने मुझे जानते हैं, जैसे पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूँ, और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूँ। मेरे पास और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं हैं।

मुझे उन्हें भी लाना होगा, और वे मेरी आवाज़ सुनेंगे। भेड़ें ऐसा ही करती हैं, क्योंकि एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा।

पिता में, परमेश्वर के झुंड में, परमेश्वर के लोगों में, अन्यजातियों के विश्वास करने की बात करता है। इसी कारण से, पिता मुझसे प्रेम करता है, पद 17, क्योंकि मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ। कोई इसे मुझसे नहीं छीनता, बल्कि मैं इसे अपनी इच्छा से देता हूँ।

मुझे इसे छोड़ने का अधिकार है। मुझे इसे फिर से लेने का अधिकार है। यह जिम्मेदारी मुझे मेरे पिता से मिली है।

और फिर 28, मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगे। कोई उन्हें मेरे हाथ से या पिता के हाथ से नहीं छीनेगा। हम भेड़ों की रक्षा करने में, परमेश्वर के लोगों को बचाने में एक हैं।

यीशु वह अच्छा चरवाहा है जो अपनी भेड़ों के लिए मरता है, उनके लिए अपना जीवन देता है, और पूरे शास्त्र में खुद को अद्वितीय रूप से जी उठाता है। यूहन्ना 2:19 से 21, 22 में, तीन दिनों में

इस मंदिर को नष्ट कर दो, मैं इसे जी उठाऊँगा। और यहाँ यूहन्ना 10:17 और 18 में, यीशु खुद को जी उठाता है।

अच्छे चरवाहे की कल्पना अनंत जीवन देने वाले के साथ मेल खाती है। जैसा कि हमने पद 28 में देखा, मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ। वे कभी भी, कभी भी नाश नहीं होंगे।

यीशु भी परमेश्वर का मेम्ना है। हम इसे यूहन्ना अध्याय 1 में बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की गवाही के विषय में तुरंत देखते हैं। देखो, वह कहता है, वह यीशु की गवाही देता है। वह प्रकाश नहीं था, 1:19 से 28, लेकिन वह प्रकाश के बारे में गवाही देता है, 1:29 से 34 तक।

देखो, परमेश्वर का मेम्ना, जो जगत का पाप उठा ले जाता है। देखो, यीशु एक महान बलिदान कर रहा है। और 36 इसी बात की याद दिलाता है।

जॉन बस यही कहता है, देखो परमेश्वर का मेम्ना, और इस समय उसके दो शिष्य यीशु को छोड़कर जॉन के पीछे चले जाते हैं। और जॉन इस बात से खुश है क्योंकि वह एक गवाह है। वह एक संकेतकर्ता है।

वह मसीहा नहीं है। वह मसीहा है। वह दूल्हे का दोस्त है जो चाहता है कि दुल्हन, परमेश्वर के लोग और कलीसिया दूल्हे के साथ जुड़ें।

उसे नहीं। वह सिर्फ एक दोस्त है। अगर आप कहें तो वह सबसे अच्छा इंसान है।

इस बात पर बहुत अटकलें और अध्ययन हुए हैं कि जब यूहन्ना कहता है, परमेश्वर का मेम्ना, जो संसार के पापों को दूर ले जाता है, तो इसका क्या अर्थ है। इस मेम्ने को पहचानने की कोशिश की गई। कुछ लोग कहते हैं बलि का बकरा। कुछ कहते हैं फसल का मेम्ना।

कुछ लोग कहते हैं कि यिर्मयाह के लेखन में एक जानवर का उल्लेख है। मुझे याद नहीं कि कौन सा। ये सब और भी बहुत कुछ दिया गया है।

और मुझे लगता है कि आप शायद पासओवर के लिए एक अच्छा मामला बना सकते हैं। लेकिन मैं लियोन मॉरिस के पक्ष में हूँ, इस पर अत्यधिक हठधर्मिता किए बिना। मैं लियोन मॉरिस के समाधान का समर्थन करता हूँ कि यह पूरे पुराने नियम, पूरे पुराने नियम की बलिदान प्रणाली का एक सामान्य संदर्भ है। यीशु इसे पूरा करते हैं।

वह इसे बदल देता है। फिर से इब्रानियों की पुस्तक की शिक्षा के साथ बहुत अलग शब्दावली के साथ समानता पर ध्यान दें। यीशु की मृत्यु के कारण, पुराने नियम के बलिदान एक भयानक विराम पर आ जाते हैं।

पाप के लिए अब कोई बलिदान नहीं है। अब मानव पुजारियों, यहाँ तक कि महायाजकों के लिए भी कोई स्थान नहीं है। यीशु महान महायाजक हैं जो इन सभी को पूरा करते हैं और इन्हें अप्रचलित बनाते हैं।

बेशक, इब्रानियों में और भी बहुत कुछ विस्तार से बताया गया है। लेकिन यूहन्ना ने इन चंद शब्दों में भी कहा है कि परमेश्वर के मेरे को देखो जो संसार का पाप उठा ले जाता है। शुक्र है कि ईसाई चर्च ने हमेशा से ही इस बात पर विश्वास किया है कि जो कोई चाहे उसे सुसमाचार मुफ्त में दिया जा सकता है।

और यह दुनिया के लिए यीशु की मृत्यु पर आधारित है। यह सभी जातियों, सभी भाषाओं, किसी भी स्थान पर रहने वाले लोगों और किसी भी जातीयता के लोगों के लिए है। परमेश्वर और मानवजाति के बीच केवल एक ही मध्यस्थ है, और वह मनुष्य मसीह यीशु है। वह उन सभी के लिए मध्यस्थ है जो उस पर विश्वास करते हैं।

यूहन्ना 17 एक अद्भुत प्रार्थना है। अरे यार, इसमें बहुत कुछ है। हम इसे और विस्तार से देखेंगे, जिसमें अभी भी एक से अधिक विषय आने बाकी हैं।

लेकिन अभी के लिए, पद 19 यीशु के याजकीय बलिदान की बात करता है। 17 पहले से ही। उन्हें पवित्र करो। यीशु सच्चाई में पिता से प्रार्थना करता है।

तेरा वचन सत्य है। जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा है। हमारा हित इसी में है। 19.

और उनके लिए, मैं खुद को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सच्चाई से पवित्र हो जाएँ। सबसे पहले, मैं यह बताना चाहता हूँ कि ESV ने पद 17 में उन्हें पवित्र किया है, और पद 19 में उन्हें पवित्र किया जा सकता है। और यह वही शब्द है, हगियाज़ो, जिसका इस्तेमाल तब किया जाता है जब वह कहता है, मैं खुद को पवित्र करता हूँ।

मैं समझता हूँ कि ESV क्या कर रहा है। यीशु का खुद को पवित्र करना शिष्यों को पवित्र करने से अलग है। वह अपनी मृत्यु के लिए खुद को अलग करके खुद को पवित्र करता है।

मेरा मानना है कि यह एक पुरोहित रूपक है। वह खुद को पवित्र करता है। वह क्रूस पर अपने बलिदान के लिए खुद को पवित्र करता है।

इसका एक परिणाम यह है कि वे भी सच्चाई से पवित्र हो सकते हैं। निश्चित रूप से, वह खुद को एक अलग तरीके से पवित्र करता है, जिस तरह से वे पवित्र होते हैं। उसका अपना आत्म-पुजारी समर्पण उसे इस कार्य के लिए प्रतिबद्ध करता है।

और यही उद्धार का अनूठा आधार है जिसे यूहन्ना 17 की भाषा में उसके सभी लोगों की शुद्धि या सफाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है, वे सभी जिन्हें पिता ने उसे यूहन्ना के सुसमाचार की भाषा में दिया है, वे सभी जो उनके वचन के माध्यम से उस पर विश्वास करते हैं। यही वह अगला शब्द भी है जो पद में कहा गया है। इसलिए, यीशु ने खुद को एक महायाजक के रूप में पवित्र किया और खुद को पवित्र करने और पवित्र के रूप में अलग करने के लिए याजकीय बलिदान चढ़ाए।

पौलुस ने कहा कि सभी विश्वासियों को पवित्र बनाओ। और फिर श्लोक 17 में बताया गया है कि यह कैसे काम करता है, उन्हें अपने सत्य से पवित्र बनाओ। तुम्हारा वचन सत्य है।

यह विशेष रूप से परमेश्वर का प्रचारित वचन है जिसका उपयोग परमेश्वर अपने लोगों को पवित्र करने के लिए करता है। लेकिन उस पवित्रीकरण का आधार स्वयं में नहीं है। यह उद्धारक, प्रभु यीशु मसीह में निहित है, जिसने खुद को एक महायाजक के रूप में पवित्र किया और पाप के लिए एक अद्वितीय और अंतिम बलिदान दिया।

क्रिस्टस विक्टर 1930 के दशक में गुस्ताव एलेन द्वारा लिखी गई एक किताब का नाम है। यह धर्मशास्त्र में एक तकनीकी शब्द बन गया है क्योंकि उन्होंने न्यू टेस्टामेंट में एक विजय मूल भाव की ओर इशारा किया था जिसे सभी ने काफी हद तक नजरअंदाज कर दिया था। रूढ़िवादी दंडात्मक प्रतिस्थापन पर जोर देते हैं।

यीशु ने हमारी सजा ली। उदारवादी कुछ सामान्य विचारों या यहाँ तक कि यीशु की मृत्यु को एक उदाहरण के रूप में पेश करने पर जोर देते हैं। वे गलत नहीं हैं, एलेन ने कहा, लेकिन बाइबल में मुख्य विचार यह है कि मसीह विजेता है।

यह एक शक्तिशाली पुस्तक है जिसका जबरदस्त प्रभाव था और फिर भी यह अपने मामले को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती है। उनके लिए यह लिखना कि इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य विषय क्राइस्टस विक्टर है, बस अंधा करने जैसा है। इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य विषय मसीह हमारा बलिदान और महायाजक है।

इसमें कोई संदेह नहीं है। ओह, अध्याय दो में क्राइस्टस विक्टर है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह सच है।

क्योंकि बच्चे मांस और खून के हैं, इसलिए उसने भी उसी का हिस्सा लिया ताकि मृत्यु के माध्यम से वह उसे नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, शैतान। वहाँ क्राइस्टस विक्टर है। लेकिन हे भगवान, अध्याय एक और सात और नौ और दस से, अध्याय एक।

पहले अध्याय में एक सुंदर कथन है। पापों के लिए शुद्धिकरण करने के बाद, वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गया। इसका परिचय दूसरे अध्याय में क्राइस्टस विक्टर के सामने दिया गया है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सातवें अध्याय में और विशेष रूप से नौवें और दसवें अध्याय में इसकी व्याख्या की गई है।

तो क्या क्राइस्टस विक्टर बाइबल का विषय है? हाँ, पॉल के पास है। जॉन के पास है। लेकिन यह एकमात्र विषय नहीं है।

गुस्ताव एलेन ने भी ऐतिहासिक धर्मशास्त्र को अपनी थीसिस के अनुरूप ढाला। यह एक अच्छी थीसिस है। यह एक उपेक्षित विषय है।

पुराना नियम। प्रभु योद्धा है, पुराने नियम का दिव्य योद्धा रूपांकन। मूसा की प्रार्थना, निर्गमन 15।

यहोवा एक योद्धा है जो क्रिस्टस विक्टर रूपांकन में प्रभु यीशु में अवतरित हुआ है। लेकिन कई चित्र हैं, और कानूनी दंडात्मक प्रतिस्थापन भी एक प्रमुख चित्र है। हम इस चित्र को यूहन्ना 12:31 में देखते हैं।

अब यीशु कहते हैं कि यह इस दुनिया का न्याय है। ओह, दुनिया एक पेचीदा शब्द है। दुनिया भगवान की रचना है।

यह वह सुंदर दुनिया है जिसे उसने बनाया है। यह वे लोग हैं जिन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। यह दुष्ट विश्व व्यवस्था भी है जो परमेश्वर के गले पर पड़ी है, उसे मारना चाहती है।

यहाँ यही अर्थ है। अब इस संसार का न्याय होने वाला है। यह पहला यूहन्ना 2:15 है।

संसार की हर चीज़। जीवन का घमंड। शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा।

यही तो है। यही वह है जो परमेश्वर का विरोध करता है। अब इस संसार का न्याय होने वाला है।

अब, क्या इस दुनिया के शासक को बाहर निकाल दिया जाएगा? इस दुनिया का राजकुमार या इस दुनिया का शासक शैतान के लिए पदनाम हैं। वह किस अर्थ में राजकुमार और शासक है?

यह हड़पने वाले के अर्थ में है। हमने जॉन 8 में देखा। यीशु ने कहा कि शैतान शुरू से ही झूठा और हत्यारा था। उसने आदम और हव्वा को, अगर आप कहें, अपने झूठ से घात लगाया।

निश्चित रूप से, आप निश्चित नहीं होंगे कि आप मरेंगे। लेकिन जब उन्होंने खाया तो आध्यात्मिक रूप से वे मर गए, और बाद में, वे शारीरिक रूप से मर गए - हमारे पहले माता-पिता।

हमें सावधान रहना होगा क्योंकि परमेश्वर अपने विद्रोही प्राणी शैतान से कहीं ज़्यादा बड़े तरीके से इस दुनिया का शासक है। अब, क्या इस दुनिया के शासक को बाहर निकाल दिया जाएगा? यह समय की बातों के पूरे होने के संदर्भ में है।

यह परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु में है। विडंबना यह है कि उसे ऊपर उठाया गया। अगली ही आयत कहती है कि दुष्ट को पराजित किया जाएगा।

13 1 और 2 अब फसह के पर्व से पहले जब यीशु को पता था कि इस दुनिया से निकलकर पिता के पास जाने का उसका समय आ गया है, तो उसने अपने लोगों से, जो दुनिया में थे, प्रेम किया और उनसे अंत तक प्रेम किया। तो, यहाँ विजेता है। उसे जीत का भरोसा है, वह हमेशा क्रूस पर चढ़ता है, और यह सुंदर नहीं है।

लेकिन वह जानता था कि दुनिया को छोड़कर पिता के पास लौटने का उसका समय आ गया है। ओह, यहाँ साज़िश है - श्लोक 2। रात के खाने के दौरान, शैतान ने पहले से ही यहूदा इस्करियोती के दिल में शमौन, बेटे को डाल दिया था, ताकि वह उसे धोखा दे।

शैतान बारह यहूदा इस्करियोती में से एक को परमेश्वर के पुत्र के साथ विश्वासघात करने के लिए उकसाता है। वैसे, शिष्यों में दो यहूदा हैं। दूसरा व्यक्ति वास्तव में खुश है कि इसमें इस्करियोती लिखा है।

यहूदा, हलफर्ड्स का बेटा, क्या यह सही है? वैसे भी, यहाँ शैतान यहूदा को भड़काता है 13:2, और वह उसे शक्ति देता है 13:27. यहूदा के निवाला लेने के बाद, शैतान उसके अंदर प्रवेश कर गया। यह डरावना है।

यहूदा तुम्हें देता है शैतान यहूदा को वह विचार देता है जो वह उसे प्रेरित करता है, और अब वह उसे गंदा काम करने के लिए सशक्त बनाता है। फिर भी, यीशु जानता है कि इस दुनिया को छोड़ने और पिता के पास लौटने का समय आ गया है। यह ऊपर उठाए जाने के माध्यम से है, लेकिन इसका दोहरा अर्थ है।

भयानक अपमानजनक मौत। दुख और मृत्यु। पिता के दाहिने हाथ में उत्कर्ष की शानदार शुरुआत।

14:30 और 31, और अब मैं पिता के पास जा रहा हूँ, जैसा कि वह पद 28 में कहता है। अब, मैंने तुम्हें इसके होने से पहले ही बता दिया है कि जब यह होगा, तो तुम विश्वास कर सकोगे। मैं अब तुम्हारे साथ ज़्यादा बात नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनिया का शासक आ रहा है।

यह फिर शैतान है। उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। कोई भी दूसरा इंसान ऐसा नहीं कह सकता, और हाँ, यीशु एक इंसान है।

वह एक साधारण इंसान नहीं है, बल्कि वह एक इंसान है। वह ईश्वर-मनुष्य है। लेकिन शैतान का हम सभी पर दावा है क्योंकि हम पापी हैं।

यीशु पर कोई दावा नहीं है। यीशु में कुछ भी ऐसा नहीं है जो शैतान के प्रलोभन से मेल खाता हो। लेकिन मैं वही करता हूँ जो पिता ने मुझे आज्ञा दी है।

इसमें कोई सत्तामूलक अधीनता नहीं है। पिता और पुत्र और आत्मा समान हैं। इसमें एक कार्यात्मक या आर्थिक अधीनता है।

बेटा सिर्फ़ एक बार ही नहीं बल्कि बार-बार अपनी इच्छा को पिता की इच्छा के अधीन कर देता है। क्यों? जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है, हम पापियों और हमारे उद्धार के लिए। मैं वही करता हूँ जो पिता ने मुझे करने की आज्ञा दी है ताकि दुनिया जान सके कि मैं पिता से प्यार करता हूँ।

उठो, चलो यहाँ से चलते हैं। इस दुनिया का शासक आ रहा है। उसने यहूदा को प्रेरित किया है और उसे मुझे धोखा देने की शक्ति दी है।

16:11 मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है। 16:6 क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा।

अगर मैं चला जाऊँगा, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। जब वह आएगा, तो वह पाप, धार्मिकता और न्याय के बारे में दुनिया को दोषी ठहराएगा। यह एक जटिल मार्ग है जिस पर मैं बहुत विस्तार से काम करूँगा जब हम पवित्र आत्मा और उसकी सेवकाईयों पर पहुँचेंगे।

लेकिन अभी के लिए, वह न्याय के बारे में दुनिया को दोषी ठहराएगा क्योंकि इस दुनिया के शासक का न्याय किया जा चुका है। मैं बस आखिरी हिस्से पर ज़ोर देना चाहता हूँ। यीशु के मरने से पहले, ठीक यूहन्ना 17 की तरह, मरने या जी उठने से पहले, वह अपने मन की आँखों में पिता की उपस्थिति में वापस आ जाता है।

तो यहाँ, इस दुनिया के शासक की निंदा की जाती है और यीशु के जाने से पहले ही उसका न्याय किया जाता है और निश्चित रूप से, यह क्रूस पर है कि शैतान पराजित होता है। 16:32, वह समय आ रहा है जब वे तितर-बितर हो जाएँगे। शिष्य तितर-बितर हो जाएँगे।

उन्हें बहुत मुश्किल समय से गुजरना होगा। जब उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा तो वे भाग जाएँगे। यूहन्ना 16:33 मैंने ये बातें तुमसे इसलिए कही हैं कि तुम मुझमें शांति पाओ।

अरे, संसार में तुम्हें क्लेश है। लेकिन हिम्मत रखो, मैंने संसार को जीत लिया है। यह फिर से एक भविष्यवाणी की तरह है।

यह इस बात का विवरण है कि उसके निकट-मृत्यु पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में क्या होगा। यूहन्ना 11 में, हमारे पास यह उत्सुक भविष्यवाणी है, कैफा की एक अनजाने में की गई भविष्यवाणी। हे भगवान।

आपके लिए यही बेहतर है कि एक आदमी लोगों के लिए मर जाए। यह बात मुझे बहुत हँसाती है। विडंबना की बात है।

यह विडंबनाओं की सबसे बड़ी विडंबना है। हे प्रभु, 11:45 से 52. इसलिए, बहुत से यहूदी जो मरियम के साथ आए थे और जिन्होंने देखा था कि यीशु ने लाज़र को मरे हुए में से जीवित करके क्या किया, उस पर विश्वास किया।

हालाँकि, उनमें से कुछ फरीसियों के पास गए और उन्हें बताया गया कि यीशु ने क्या किया है। इसलिए मुख्य याजकों और फरीसियों ने यहूदी शासक निकाय, महासभा की परिषद को इकट्ठा किया। ओह, उन्होंने शासन किया।

रोमनों ने सोचा, यार, ये यहूदी बहुत ही नखरेबाज़ हैं, और उनके कानून को हम समझ ही नहीं सकते। हम उन्हें अपने अधीन शासन करने देंगे। लेकिन हम उन्हें अपने मामलों की देखभाल खुद करने देंगे।

ओह, ये यहूदी कितने परेशान करने वाले हैं। वे परिषद को इकट्ठा करते हैं, और वे कहते हैं कि हमें इस आदमी के लिए क्या करना चाहिए, जो कई संकेत करता है। तल्मूड स्वीकार करता है कि यीशु था, लेकिन वे कई संकेत करने के बारे में नहीं कहते। वे दावा करते हैं कि वह एक जादूगर था।

वे चमत्कारी तत्व से इनकार नहीं करते। वे बस इसे अंधेरे पक्ष का हिस्सा मानते हैं। वह कई संकेत करता है। अच्छा भगवान, उसने अभी-अभी अपने दोस्त को मृतकों में से जीवित किया है।

अगर हम उसे ऐसे ही रहने देंगे, तो हर कोई उस पर विश्वास करेगा। अगर हम उसे नहीं मारेंगे, तो पूरा देश उसका अनुसरण करेगा। इसका मतलब है कि बड़ी संख्या में लोग उसका अनुसरण करेंगे, और रोमन आएंगे क्योंकि वह नागरिक अशांति जैसी हलचल पैदा करेगा।

रोमन सैनिक यहाँ आएंगे और वे मंदिर को छीन लेंगे और हम शायद अपना शहर यरुशलम भी खो देंगे। रोमन आएंगे और हमारी जगह और हमारा देश दोनों छीन लेंगे। हम सोचते हैं कि यह जगह भगवान का मंदिर है।

उनमें से एक, कैफा, उस वर्ष एक महायाजक था। इसका मतलब है कि यह उस भाग्यशाली वर्ष की तरह है जब उसे यह विशेष कार्य करना था, और भविष्यवाणी ने उनसे कहा कि तुम कुछ भी नहीं जानते। जोसेफस हमें बताता है कि सद्दूकी असभ्य थे। यहाँ इसका एक उदाहरण है।

न ही तुम समझते हो कि तुम्हारे लिए यह बेहतर है कि एक आदमी लोगों के लिए मर जाए, न कि यह कि पूरा देश नष्ट हो जाए। यह राजनीतिक स्वार्थ का बयान है। चलो उसे पकड़ो और इस बात को खत्म करो।

उसका यही मतलब था, लेकिन बिना किसी इरादे के, उसने परमेश्वर के पुत्र के प्रतिस्थापन प्रायश्चित की भविष्यवाणी की है। तुम्हारे लिए बेहतर है कि एक आदमी लोगों के लिए मर जाए, न कि पूरे राष्ट्र का नाश हो। उसने यह अपनी मर्जी से नहीं कहा, लेकिन उस वर्ष एक महायाजक होने के नाते, उसने भविष्यवाणी की कि यह उसका इरादा नहीं था कि यीशु राष्ट्र के लिए मरेगा।

वह यहूदियों के लिए मरने जा रहा है, न केवल राष्ट्र के लिए बल्कि परमेश्वर के बच्चों को एक करने के लिए जो विदेशों में बिखरे हुए थे। इसलिए, वह सिर्फ यहूदियों की तरह नहीं था जिन्होंने यहूदी शिष्यों को सुना जिन्होंने यूहन्ना 1 :8 सुना। सुसमाचार दुनिया के अधिकांश हिस्सों में दुनिया के अंत तक जाने वाला है, शायद इसका मतलब यह था कि यहूदियों का पूरी दुनिया में फैल जाना और परमेश्वर के मन में कुछ और बातें थीं जैसा कि उसने पुराने नियम में घोषणा की थी। उदाहरण के लिए, यशायाह के बारे में सोचें।

खैर, परमेश्वर के मन में अन्यजातियों और परमेश्वर के लोगों को शामिल करने का विचार था। इसलिए, यह सुनकर यहूदी शायद यही सोचते होंगे: बिखरे हुए यहूदी। लेकिन परमेश्वर ने, जैसे कि उसके पास अन्य भेड़ें हैं, जिन्हें इस झुंड में लाया जाएगा, इसलिए एक चरवाहा और एक झुंड होगा।

तो यहाँ, यीशु राष्ट्र के लिए मरने जा रहा है, लेकिन साथ ही परमेश्वर के बिखरे हुए बच्चों को एक करने जा रहा है; टिप्पणीकार इस बात पर काफी हद तक सहमत हैं कि यह गैर-यहूदियों को शामिल करने की बात करता है। इसलिए, उस दिन से, उन्होंने उसे मार डालने की योजना बनाई। कैफा का वचन काम करता है।

वे यीशु की हत्या करने के लिए उसके खिलाफ राजनीतिक षड्यंत्र रचते हैं। और फिर भी, परमेश्वर, जिसने बालाम के गधे के माध्यम से बात की, महायाजक के माध्यम से भविष्यवाणी की, जिसका इरादा विश्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु के बचाने वाले महत्व के बारे में बात करना नहीं था। यीशु के कार्य की एक आखिरी तस्वीर, जिसके साथ हम इस व्याख्यान का समापन करेंगे, यूहन्ना 12 में दी गई है।

यूहन्ना 12 में इनमें से कुछ का सबसे बड़ा संकेन्द्रण है; हम इन्हें प्रायश्चित विषय कहेंगे। यह प्रायश्चित से भी बड़ा है। यूहन्ना के पूरे सुसमाचार में यीशु के कार्य की कुछ तस्वीरें।

यूहन्ना 12:32, 33 में मनुष्य के पुत्र का ऊपर उठाया जाना दर्शाया गया है। यूहन्ना 12:31 में मसीह विजेता है, मसीह विजेता। यूहन्ना 12, 20 से 25 में गेहूँ का दाना मरता हुआ और फल देता हुआ दिखाया गया है।

यह सबसे अधिक केंद्रित है क्योंकि यह एक साथ कई छंदों का विषय है। फिर, जॉन में अन्य स्थान हैं जहाँ ये चित्र बिखरे हुए हैं। मैं निश्चित रूप से पवित्र शास्त्र की आलोचना नहीं कर रहा हूँ।

यीशु गेहूँ का वह दाना है जो यूहन्ना के सुसमाचार में अद्वितीय है। हमारे पास यह धारणा है, ठीक वैसे ही जैसे कैफा की भविष्यवाणी यूहन्ना के सुसमाचार में अद्वितीय है। अध्याय 12, अब जो लोग पर्व पर आराधना करने गए थे, उनमें कुछ यूनानी भी थे।

इसलिए, उन्होंने फिलिप्पुस से कहा, गलील के बैतसैदा से आए फिलिप्पुस से पूछा, हे प्रभु, हम यीशु से मिलना चाहते हैं। फिलिप्पुस ने जाकर अन्द्रियास को बताया। अन्द्रियास और फिलिप्पुस यीशु को बताने गए।

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, यूनानियों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। जैसा कि मैंने पहले कहा, हमें लगता है कि श्लोक 32 में उनके अनुरोध को ध्यान में रखा गया है जब वह कहता है, वह सभी लोगों को अपने पास खींचेगा, न केवल यहूदियों को, बल्कि उन यूनानियों को भी जो उसके बारे में अधिक जानने की कोशिश कर रहे हैं। दिलचस्प।

यीशु के मन में तुरंत ही अन्य, अधिक महत्वपूर्ण बातें आ गईं। यूहन्ना 12:23, मनुष्य के पुत्र की महिमा होने का समय आ गया है। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इन्हीं शब्दों के कारण हम उसकी मृत्यु को गेहूँ के दाने के साथ पहचानते हैं।

यह वास्तव में दोहरा काम करता है, दोहरा अर्थ नहीं, लेकिन पहले, वह अपनी मृत्यु के संदर्भ में इसके बारे में बात करता है, और फिर वह अपने शिष्यों की सेवकाई के संदर्भ में इसके बारे में बात करता है। मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक गेहूँ का दाना ज़मीन में गिरकर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है। अगर वह मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।

1 कुरिन्थियों 15 की भाषा के समान। प्राचीन लोगों के मन में, बीज मर जाता है। इसका मतलब है, जब इसे दफनाया जाता है, जब इसे लगाया जाता है, तो बोया गया बीज मर जाता है।

यह आँखों से ओझल हो जाता है, और उस रूप में फिर कभी नहीं दिखता। यह एक अलग रूप में सामने आता है। 1 कुरिन्थियों 15 में, एक अलग शरीर में, पॉल कहते हैं।

यहाँ, जॉन कहते हैं, यह केवल तभी होता है जब बीज मर जाता है। यह केवल तभी होता है जब यह धरती में, मिट्टी में छिपा रहता है, और बारिश और धूप वगैरह पाता है, और फिर यह अंकुरित होता है, और यह गेहूँ का दाना होता है, इसलिए यह गेहूँ पैदा करता है। जब तक गेहूँ का दाना धरती में गिरकर मर नहीं जाता, तब तक यह अकेला रहता है, लेकिन अगर यह मर जाता है, तो यह बहुत फल देता है।

यूहन्ना पर टिप्पणीकार, उसी संदर्भ और पूर्ववर्ती संदर्भ के कारण, यीशु को समझते हैं और कहते हैं कि वह मरने जा रहा है। वह महिमान्वित होने जा रहा है क्योंकि वह समय आ गया है। वह सबसे पहले गेहूँ का दाना है।

यह ईसाई धर्म के अनुसार है। वह गेहूँ का एक दाना है। वह मरता है, और उसकी मृत्यु से बहुत सारे फल पैदा होते हैं।

लेकिन चूँकि पहले की आयतें उसके गेहूँ के दाने होने की ओर इशारा करती हैं, इसलिए अगली आयत, यीशु स्वयं, उसके शिष्यों पर लागू होती है। जब तक गेहूँ का दाना ज़मीन में गिरकर मर नहीं जाता, तब तक वह अकेला रहता है। अगर वह मर जाता है, तो वह बहुत फल देता है।

जो कोई अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है, यूहन्ना 12:25. जो कोई इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह उसे अनन्त जीवन के लिये सुरक्षित रखेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो उसे मेरे पीछे आना चाहिए।

जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है।

जो कोई इस संसार में अपने जीवन से घृणा करता है, वह उसे अनंत जीवन के लिए सुरक्षित रखेगा। शिष्य भी गेहूँ के दाने हैं। और उन्हें मरना है। उन्हें अपने जीवन से घृणा करनी है, ऐसा कहा जाता है।

इसका मतलब है कि उन्हें परमेश्वर और यीशु को पहले स्थान पर रखना चाहिए। अगर वे ऐसा करते हैं, तो वे अपने जीवन को अनंत जीवन के लिए बचाकर रखेंगे। इसे नोट कर लें; ऐसे बहुत कम स्थान हैं जहाँ यूहन्ना ने जीवन का उपयोग अभी तक भविष्य में न आने वाले जीवन के लिए किया है।

आमतौर पर, यह विश्वासी के पास पहले से ही मौजूद है, अनंत जीवन। वह पिता और पुत्र को जानता है, यूहन्ना 17:3। तो यहाँ, गेहूँ का दाना ज़मीन में गिरकर मर रहा है, सबसे पहले, यीशु की बात करता है, जो अपने उस समय में जो महिमा पाने के लिए आया है, गेहूँ के दाने की तरह है। वह मरता है, उसे दफनाया जाता है, वह फिर से जी उठता है।

और यद्यपि यह विडंबनापूर्ण है, यह निश्चित रूप से अप्रत्याशित है कि उनकी मृत्यु, उनका स्पष्ट निधन, बहुत सारे फलों का कारण है। और गुरु की तरह, वैसे ही छात्र भी। उन्हें भी गेहूँ के दाने, गेहूँ के दाने होने चाहिए।

उन्हें इस संसार में अपने जीवन से घृणा करनी है, जिससे वे अपने जीवन को अनंत जीवन के लिए बचा सकें। उन्हें खुद के लिए मरना है, पौलुस की भाषा। और यीशु पर विश्वास करना है और उसका अनुसरण करना है, उसका वचन मानना है, और उसकी सेवा करनी है, 26।

पिता उनका आदर करेंगे। वे अगली दुनिया में धन्य होंगे। और वे फल पैदा करेंगे। परमेश्वर भी उनके द्वारा बहुत फल पैदा करेगा।

मूर्ख व्यक्ति की तरह, अमीर आदमी, जिसने बड़े-बड़े साइलो बनाए, उस दिन, उसके जीवन की मांग की गई, और उसने सब कुछ खो दिया। वह उन लोगों की तरह है जो अपने जीवन से प्यार करते हैं और उसे खो देते हैं। तो, यीशु के उद्धार कार्य की छह तस्वीरें।

ये सात तस्वीरें हैं। मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाया गया और महिमा में उठाया गया - अच्छा चरवाहा जो अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है और उसे फिर से ले लेता है।

परमेश्वर का मेम्रा जो संसार के पापों के लिए बलिदान के रूप में मरता है। पुरोहितीय बलिदान, एक महायाजक के रूप में, यीशु अपने आप को पवित्र करता है और अपने लोगों को पवित्र करने के लिए एक अद्वितीय बलिदान में मरता है। विजेता जो अपनी मृत्यु में स्पष्ट हार में, अपने पुनरुत्थान के साथ मिलकर, परमेश्वर के लोगों के दुश्मनों को हरा देता है।

शैतान, मृत्यु, कब्र, पाप, और संसार की व्यवस्था परमेश्वर के विरुद्ध है। यीशु उनमें से एक है, विडंबना यह है कि महायाजक ने भी ऐसा कहा, जो राष्ट्र और बिखरे हुए अन्यजातियों के लिए मरेगा। वह और उसके शिष्य, लेकिन वह विशिष्ट रूप से गेहूँ का दाना है जो जमीन में गिरता है और मर जाता है।

इस कारण से, उन्हें भी ऐसा ही करना है। हालाँकि उनकी मृत्यु से मुक्ति नहीं मिलती, लेकिन उनकी मृत्यु के कारण, वे स्वयं के लिए मर जाते हैं और सुसमाचार का प्रचार करते हैं और परमेश्वर द्वारा कई लोगों को मृत्यु से जीवन में लाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और जोहानिन धर्मशास्त्र पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 12 है, यीशु के कार्य की तस्वीरें।